ब्रिटेन की लोक कथाऐं-1

इंगलैंड, वेल्स और स्कौटलैंड

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Britain Ki Lok Kathayen-1 (Folktales From Britain-1)
Cover Page picture: Big Ben, London (UK)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Britain

विंडसर, कैनेडा
फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

ब्रिटेन की लोक कथाऐं–1 5

1 बिल्ला और चुहिया 7

2 तीन छोटे सूअर 10

3 तीन भालू 17

4 छोटी लाल मुर्गी 22

5 आलसी जैक 28

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुॅचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॅा तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई 2018

ब्रिटेन की लोक कथाऐं–1

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। साइज़ में यूरोप आस्ट्रेलिया से पहले आता है। यूरोप की बहुत सारी लोक कथाऐं अंग्रेजी भाषा में भी मिल जाती हैं।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में काफी मिलता है और इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की केवल कुछ लोक कथाऐं हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है क्योंकि इनके बिना दुनियॉ का लोक कथा साहित्य कुछ अधूरा सा लगता है। इस महाद्वीप में कुल मिला कर **50** से भी ज़्यादा देश है पर इतने सारे देशों में से केवल कुछ ही देशों की लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं – ब्रिटेन, नौरडिक देशों के पॉच देश[1], जर्मनी, इटली[2] आदि। इसलिये इन देशों की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से ही दी गयी हैं।

इस महाद्वीप में सिन्डरैला की कहानी बहुत मशहूर है और वह इसके भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न तरीके से कही सुनी जाती है। सिन्डरैला के अलावा यहॉ कुछ और भी कथाऐं ऐसी हैं जो इसके भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न तरीके से कही जातीी है। ये कथाऐं "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में दी गयीं हैं।

इस महाद्वीप की सबसे ज़्यादा कथाऐं ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी की लोक कथाऐं, ग्रिम्स और ऐन्ड्रू लैंग की कथाओं के संग्रहों में मिलती हैं। कुछ अनुवादकों ने केवल इटली की लोक कथाओं पर भी ध्यान दिया है। दूसरे देशों की लोक कथाऐं बहुत कम मिलती हैं और कुछ देशों की लोक कथाऐं तो मिलती ही नहीं हैं।

हालॉकि इस महाद्वीप की लोक कथाऐं हज़ारों में लिखी जा सकती हैं पर इस समय हमने यहॉ की केवल ब्रिटेन, जर्मनी, आयरलैंड और इटली की लोक कथाओं पर खास ध्यान दिया है। इनकी कथाऐं हमने इन देशों के नाम से ही प्रकाशित की हैं।

ब्रिटेन की लोक कथाओं पर हम यह पहली पुस्तक प्रकाशित कर रहे हैं – "ब्रिटेन की लोक कथाऐं–**1**"। इस पुस्तक में हम ब्रिटेन या ग्रेट ब्रिटेन, यानी इंगलैंड, स्कौटलैंड और वेल्स, देशों की केवल वे ही लोक कथाऐं प्रकाशित कर रहे हैं जो बहुत छोटे बच्चों को उनके सोने के समय सुनायी जाती हैं।

आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को पसन्द आयेंगी क्योंकि इस पुस्तक में ब्रिटेन की वे लोक कथाऐं दी जा रही हैं जो अंग्रज़ी में होने की वजह से या फिर उनके भारत में उपलब्ध न होने की वजह से हमारे हिन्दी भाषा भाषी बच्चे नहीं पढ़ पाते। इस पुस्तक के द्वारा अब वे ये सब लोक कथाऐं हिन्दी में पढ़ और सुन सकेंगे।

सो प्रस्तुत है तुम सबके हाथों में ब्रिटेन की लोक कथाओं की यह पहली पुस्तक "ब्रिटेन की लोक कथाऐं–**1**"।

---

[1] Nordic or Norse or Scandinavian countries are five – Iceland, Denmark, Finland, Norway and Sweden. Some folktales of Norse countries have been published under the titles of "Norse Deshon Ki Lok Kathayen-1" and "Norse Deshon Ki Lok Kathayen-2". Some mytholgical tales of those countries have been published under the title of "Norse: Dant Kathayen". All by Sushma Gupta in Hindi language.

[2] "Italy Ki Lok Kathayen" more than 150 folktales in 12 parts

संसार के सात महाद्वीप

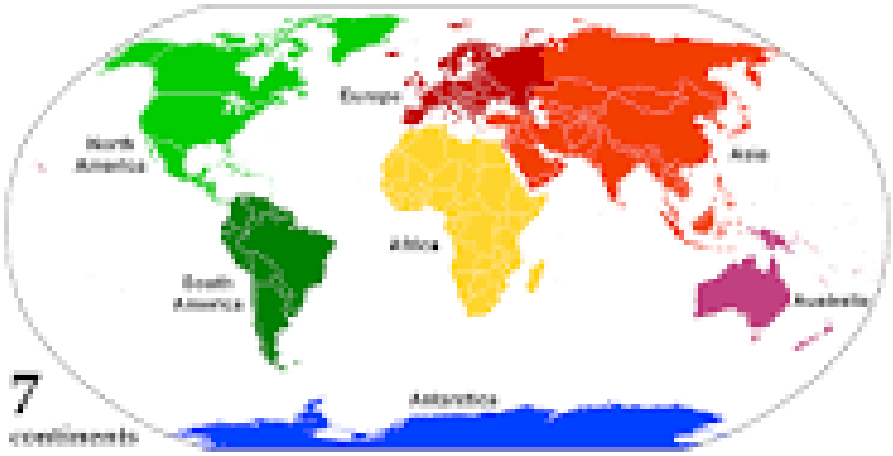

There are two distinctive geographical regions in Europe
--The first one is United Kingdom of Great Britain and Northern Ireland (4 countries) – United Kingdom, Great Britain or Britain is an island on which there are three countries – England, Scotland, Wales. Later Northern Ireland joined them, so now the “United Kingdom of Great Britain and Northern Ireland” includes the Northern part of Ireland too.
-- The other one is Norse, or Nordic or Scandinavian countries (5 countries). There are five countries in Nordic Countries – Iceland, Denmark, Finland, Norway and Sweden

1 बिल्ला और चुहिया[3]

बिल्ले और चुहिया की यह लोक कथा ब्रिटेन के बच्चों की एक बहुत ही मनपसन्द लोक कथा है। तो लो आज तुम भी पढ़ो यह लोक कथा और पढ़ कर बताओ कि तुमको यह कथा कैसी लगी।

एक बिल्ला और एक चुहिया खेलते थे एक घर में
फिर वे अनाजघर में खेलने लगे जब तक चुहिया को चोट नहीं लग गयी

चुहिया को क्या चोट लगी? हुआ यह कि बिल्ले ने चुहिया की पूँछ काट ली तो चुहिया बोली — "देखो मिस्टर बिल्ले, यह बात तुम्हारी ठीक नहीं है। तुम मेरी पूँछ वापस कर दो।"

पर बिल्ला बोला — "नहीं, मैं तुम्हारी पूँछ तुमको वापस नहीं करूँगा जब तक कि तुम गाय के पास नहीं जाओगी और मेरे पीने के लिये उसका दूध ले कर नहीं आओगी।"

सो वह कूदी और भागी भागी गाय के पास पहुँची और बोली — "ओ गाय, मेहरबानी करके मुझे थोड़ा दूध दो ताकि मैं उसको बिल्ले को पीने को दे सकूँ और वह फिर मुझे मेरी पूँछ मुझे वापस कर सके।"

---

[3] The Cat and the Mouse - a folktale from England, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=107
Collected and retold by Mike Lockett
[This story is based on a "Mother-Goose" poem. It resembles many other similar folktales told and heard in other European countries. Read them in "Billa Aur Chuhiya Jaisee Kahaniyan" by Sushma Gupta in Hindi language.]

गाय बोली — "मैं तुमको दूध नहीं दूँगी जब तक तुम किसान के पास से मुझे कुछ भूसा ला कर नहीं दोगी।"

तुरन्त वह चुहिया कूदी और भागी भागी किसान के पास पहुँची और बोली — "किसान ओ किसान। मेहरबानी करके मुझे कुछ भूसा दो ताकि मैं उस भूसे को गाय को खिला सकूँ। फिर गाय मुझे बिल्ले के लिये दूध दे देगी और मैं बिल्ले से अपनी पूँछ वापस ले सकूँगी।"

किसान बोला — "मैं तुमको भूसा नहीं दूँगा जब तक तुम मुझे कसाई से मॉस ला कर नहीं दोगी।"

सो वह चुहिया फिर कूदी और भागी भागी एक कसाई के पास पहुँची और बोली — "कसाई ओ कसाई, तुम मुझे थोड़ा सा मॉस दो। यह मॉस ले जा कर मैं किसान को दूँगी। किसान मुझे भूसा देगा, वह भूसा में गाय को दूँगी। गाय मुझे दूध देगी। दूध मैं बिल्ले को दूँगी और बिल्ला मुझे मेरी पूँछ वापस करेगा।"

कसाई बोला — "मैं तुमको मॉस तब तक नहीं दूँगा जब तक तुम मुझे बेकर[4] से डबल रोटी ला कर नहीं दोगी।"

सो वह चुहिया फिर कूदी और भागी भागी एक बेकर के पास

पहुँची और बोली — "ओ बेकर, मुझे डबल रोटी

[4] Baker is he who bakes the bread and cakes etc.

दो। यह डबल रोटी मैं कसाई को दूँगी। कसाई मुझे मॉस देगा। वह मॉस ले जा कर मैं किसान को दूँगी।

किसान मुझे भूसा देगा, वह भूसा में गाय को दूँगी। गाय मुझे दूध देगी। दूध मैं बिल्ले को दूँगी और बिल्ला मेरी पूँछ मुझे वापस करेगा।"

बेकर बोला — "मैं तुमको डबल रोटी केवल एक शर्त पर दे सकता हूँ कि तुम यहाँ फिर कभी नहीं आओगी और मेरी बेक की हुई चीज़ें कभी नहीं खाओगी और मेरे खरीदने वालों को भी कभी नहीं डराओगी।"

चुहिया ने बेकर से वायदा किया कि वह अब उसकी दूकान पर कभी नहीं आयेगी, न कभी उसकी बेक की हुई चीज़ों को खायेगी और न ही उसके खरीदारों को डरायेगी।

सो बेकर ने उसको डबल रोटी दे दी। डबल रोटी ले कर चुहिया भाग गयी।

भागी भागी वह कसाई के पास गयी। कसाई को उसने डबल रोटी दी। कसाई ने उसको मॉस दिया। मॉस ले कर वह किसान के पास गयी तो किसान ने उसको भूसा दिया।

भूसा ले कर वह गाय के पास गयी तो गाय ने उसको दूध दिया और उस दूध को ले कर वह बिल्ले के पास गयी। तब जा कर उस बिल्ले ने उसकी पूँछ वापस की।

इस तरह उस चुहिया ने अपनी पूँछ वापस पायी।

2 तीन छोटे सूअर[5]

एक बार की बात है कि तीन छोटे सूअर अपनी मॉ के साथ रहते थे। एक दिन उनकी मॉ ने उनसे कहा — "अब तुम लोग मेरे घर में रहने के लिये काफी बड़े हो गये हो सो अब तुमको अपना अपना घर बना लेना चाहिये।"

उसने उनको चूमा और कहा कि वे हमेशा बड़े बुरे भेड़िये से बच कर रहें। सो वे सूअर अपनी मॉ का घर छोड़ कर चल दिये।

जाते जाते उनको एक आदमी मिला जो एक गाड़ी में भूसा भर कर ले जा रहा था। उसको देख कर पहले छोटे सूअर ने उससे कहा — "तुम मुझे अपना भूसा बेच दो मैं उससे अपना घर बनाऊँगा।"

उस आदमी ने उसको अपना भूसा बेच दिया। भूसे से मजबूत घर तो नहीं बनता पर वह सस्ता था। इस तरह से पहले छोटे सूअर ने सस्ता सा भूसे का घर बना लिया और उसमें रहने लगा। अब उसके पास खाने के लिये काफी पैसा बच रहा।

---

[5] Three Little Pigs – a folktale from England, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=125
Retold and written by Mike Lockett
Mike has adapted from – Joseph Jacobs, "English Fairy Tales", London: David Nutt, 1898.
Jacobs' source: James Orchard Halliwell, "Nursery Rhymes and Nursery Tales", London, ca. 1843.

आगे चल कर दूसरे छोटे सूअर ने भी एक आदमी देखा जो अपनी गाड़ी में डंडियॉ भर कर ले जा रहा था। वह उससे बोला — "तुम मुझे अपनी डंडियॉ बेच दो मैं इनसे अपना घर बनाऊॅगा।"

इस आदमी ने इस दूसरे छोटे सूअर को अपनी डंडियॉ बेच दीं। अब डंडियॉ भी कोई बहुत मजबूत घर तो बनाती नहीं पर फिर भी वे भी सस्ती थीं।

सो दूसरे छोटे सूअर ने अपना घर डंडियों से बनाया। यह घर भी सस्ते में बन गया और इसके पास भी काफी पैसा खाने और सोडा पीने के लिये बच गया।

तीसरे छोटे सूअर ने भी एक आदमी देखा जो अपनी गाड़ी में ईंटें भर कर ले जा रहा था। उसने उससे कहा — "क्या तुम मुझे अपनी ये ईंटें बेचोगे? मैं इनसे अपना घर बनाऊॅगा।"

उस आदमी ने उसको अपनी ईंटें बेच दीं सो तीसरे छोटे सूअर ने अपना घर ईंटों का बनाया।

ईंटों के घर मजबूत बनते हैं पर ईंटें होती भी बहुत मॅहगी हैं। सो इस तीसरे छोटे सूअर को अपना ईंटों का घर बनाने के लिये अपना सारा पैसा खर्च कर देना पड़ा।

अब उसका घर तो नजबूत था पर उसके पास खाने के लिये कोई पैसा नहीं बचा था। खाना लेने के लिये अब उसको बाहर जाना पड़ता था।

खाने के लिये वह जंगली जड़ें, प्याज, मुशरूम आदि ले आता था और उन्हीं को खाता था। ये सब चीजें उसकी तन्दुरुस्ती के लिये बहुत ही फायदेमन्द थीं।

सो अब तीनों छोटे सूअर अपने अपने घरों में आराम से रह रहे थे कि एक दिन...

वह बड़ा बुरा भेड़िया पहले वाले सूअर के घर आया और उसके घर का दरवाजा खटखटाया और बोला — "ओ छोटे सूअर, ओ छोटे सूअर, मुझे अपने घर के अन्दर आने दो।"

छोटे सूअर ने जवाब दिया — "नहीं नहीं, मेरी छोटी ठोड़ी के बालों की कसम, नहीं नहीं।"

भेड़िया बोला — "अगर तुम मुझे अन्दर नहीं आने दोगे तो मैं अपने मुँह से बहुत सारी हवा फेंकूँगा और तुम्हारा घर उड़ा कर नीचे गिरा दूँगा।"

छोटे सूअर ने कहा — "तुम जो चाहे करो पर मैं दरवाजा नहीं खोलूँगा।"

और उस छोटे सूअर ने अपने घर का दरवाजा नहीं खोला।

तब भेड़िये ने अपने मुँह से बहुत ज़ोर की हवा फेंकी और उसका भूसे का घर हवा में उड़ा कर गिरा दिया। पहला छोटा सूअर

जितनी जल्दी भाग सकता था उतनी जल्दी भाग कर अपने छोटे भाई के डंडियों वाले घर में चला गया।

जैसे ही उसने घर में घुस कर घर का दरवाजा बन्द किया वह बड़ा बुरा भेड़िया भी उसके पीछे पीछे वहीं आ पहुँचा।

उसने उस दूसरे सूअर के घर का दरवाजा भी खटखटाया और बोला — "ओ छोटे सूअरों, ओ छोटे सूअरों, दरवाजा खोलो और मुझे घर के अन्दर आने दो।"

दोनों सूअरों ने एक आवाज में जवाब दिया — "नहीं नहीं, हमारी छोटी ठोड़ी के बालों की कसम, नहीं नहीं।"

भेड़िया बोला — "अगर तुम लोग मुझे अन्दर नहीं आने दोगे तो मैं अपने मुँह से बहुत सारी हवा फेंकूँगा और तुम्हारा घर उड़ा कर नीचे गिरा दूँगा।"

दोनों छोटे सूअरों ने कहा — "तुम जो चाहे करो पर हम तुम्हारे लिये दरवाजा नहीं खोलेंगे।"

और उन दोनों छोटे सूअरों ने अपने घर का दरवाजा नहीं खोला।

भेड़िये ने अपने मुँह से बहुत ज़ोर की हवा फेंकी और उस दूसरे छोटे सूअर का डंडियों का घर भी हवा में उड़ा कर गिरा दिया।

दोनों छोटे सूअर भाई भी जितनी जल्दी वहाँ से भाग सकते थे अपने तीसरे सबसे छोटे भाई के ईंटों वाले घर में भाग गये।

जैसे ही उन दोनों ने अपने तीसरे भाई के घर में घुस कर उसके घर का दरवाजा बन्द किया कि वह बड़ा बुरा भेड़िया उनके पीछे पीछे वहॉ भी आ पहुॅचा।

सो उसने फिर तीसरे सूअर के घर का दरवाजा खटखटाया और बोला — "ओ छोटे सूअरों, ओ छोटे सूअरों, दरवाजा खोलो और मुझे घर के अन्दर आने दो।"

तीनों सूअरों ने एक आवाज में जवाब दिया — "नहीं नहीं, हमारी छोटी ठोड़ी के बालों की कसम, नहीं नहीं।"

भेड़िया बोला — "अगर तुम लोग मुझे अन्दर नहीं आने दोगे तो मैं अपने मुॅह से बहुत सारी हवा फेंकूॅगा और तुम्हारा घर उड़ा कर नीचे गिरा दूॅगा।"

उन तीनों छोटे सूअरों ने कहा — "तुम जो चाहे करो पर हम तुम्हारे लिये दरवाजा नहीं खोलेंगे।"

और उन तीनों छोटे सूअरों ने अपने घर का दरवाजा नहीं खोला।

भेड़िये ने अपने मुॅह से बहुत ज़ोर की हवा फेंकी पर वह उनका ईंटों का घर हवा में नहीं उड़ा सका। उसने ऐसा कई बार किया पर फिर भी वह उनका घर हवा में नहीं उड़ा सका।

सो उसने अब की बार दूसरी चाल खेली। उसने उनके लिये बहुत ही अच्छा बनने की कोशिश की।

वह बोला — "ओ छोटे सूअरों, मुझे मालूम है कि बहुत ही बढ़िया शलगम[6] का खेत कहॉ है।"

तीनों सूअर एक साथ बोले — "कहॉ है वह?"

भेड़िया चालाकी से बोला — "वह तो उस पहाड़ी के दूसरी तरफ है। मैं कल आऊँगा और तब हम सब एक साथ वहॉ चल कर वहॉ से शलगम ला सकते हैं।"

सूअर बोले — "ठीक है। हम लोग तैयार रहेंगे। तुम कब आओगे?"

भेड़िया बोला — "सुबह छह बजे।"

पर तीनों छोटे सूअर अगले दिन सुबह पॉच बजे ही उठ गये और भेड़िये के आने से पहले ही वहॉ से शलगम ले आये।

जब छह बजे तो भेड़िया आया और बोला — "छोटे सूअरों आओ चलो चलें, मैं तुम लोगों के साथ शलगम तोड़ने के लिये ले जाने के लिये आ गया हूँ।"

तीनों सूअर बोले — "हम लोग वहॉ गये थे और शलगम तोड़ कर वापस भी आ गये हैं। अब हम उनको अपने शाम के खाने के लिये पका रहे हैं।"

[6] Translated for the word "Turnip" – see its picture above.

यह सुन कर भेड़िया बहुत गुस्सा हुआ। वह उन तीनों सूअरों को खा जाना चाहता था सो वह उनके घर की छत पर चढ़ गया। वहॉ से वह उनके घर की चिमनी के रास्ते उनके घर में घुसना चाहता था।

पर तीनों छोटे सूअरों ने यह सुन लिया कि वह उनकी छत पर है सो उन्होंने चिमनी के नीचे उबलते पानी का एक बड़ा सा बरतन रख दिया।

जैसे ही वह भेड़िया चिमनी में से नीचे आ रहा था कि सूअरों ने उस बरतन का ढक्कन खोल दिया और भेड़िया उस उबलते पानी में गिर पड़ा। वह चीखा और फिर से चिमनी में ऊपर की तरफ चढ़ गया।

वहॉ से वह चीखता हुआ बाहर भाग गया और फिर वह वहॉ कभी नहीं देखा गया। वह अभी तक भी चीखता हुआ सुना जाता है। तीनों सूअर फिर आराम से रहते रहे।

3 तीन भालू[7]

यह लोक कथा ब्रिटेन में "गोल्डीलौक्स और तीन भालू" के नाम से भी मशहूर है।

एक समय की बात है कि ब्रिटेन के एक जंगल में तीन भालू रहते थे – एक बड़ा भालू, एक बीच का भालू और एक छोटा भालू।

जंगल में उनका अपना मकान था। उन तीनों भालुओं के पास दलिया खाने के लिये अपने अपने कटोरे थे – बड़े भालू के पास बड़ा कटोरा, बीच वाले भालू के पास बीच वाला कटोरा और छोटे भालू के पास छोटा वाला कटोरा।

तीनों भालुओं के पास अपनी अपनी कुरसियॉ थीं बैठने के लिये – बड़े भालू के पास बड़ी कुरसी, बीच वाले भालू के पास बीच की कुरसी और छोटे भालू के पास छोटी कुरसी।

इसी तरह उन तीनों भालुओं के पास अपने अपने पलंग थे – बड़े भालू के पास बड़ा पलंग, बीच वाले भालू के पास बीच का पलंग और छोटे भालू के पास छोटा पलंग।

---

[7] Three Bears – a folktale of Britain, Europe.
[It is a well-known folktale of Britain as "Goldilocks and the Three Bears" also.]

एक दिन उन भालुओं ने सुबह नाश्ते में अपने लिये दलिया बनाया। उसको अपने अपने कटोरों में पलटा। परन्तु वह बहुत गरम था इसलिये उसके ठंडा होने तक उन्होंने जंगल में घूमने का प्रोग्राम बनाया।

जब वे जंगल में घूम रहे थे तो एक लड़की उनके घर आयी जिसका नाम था गोल्डीलौक्स[8]। पहले उसने खिड़की से झॉका और फिर चाभी वाले छेद से।

घर में कोई नहीं था सो उसने हैन्डल घुमा कर दरवाजा खोला। दरवाजा खुला था क्योंकि वहॉ चोरी का कोई डर नहीं था और वे भालू भी बहुत अच्छे थे।

क्योंकि वे किसी को कोई नुकसान नही पहुॅचाते थे इसलिये वे सोच भी नहीं सकते थे कि कोई उनको नुकसान पहुॅचायेगा।

सो गोल्डीलौक्स दरवाजा खोल कर अन्दर चली गयी। वहॉ मेज पर दलिया रखा था जिसमें से सोंधी सोंधी खुशबू उड़ रही थी। गोल्डीलौक्स ने यह भी नहीं सोचा कि वह दलिया किसका है और वह सीधी मेज के पास चली गयी।

पहले उसने बड़े भालू का दलिया चखा वह बहुत गरम था। फिर उसने बीच वाले भालू का दलिया चखा वह बहुत ठंडा था।

[8] She was named as Goldilocks as she had golden curly hair.

फिर उसने छोटे भालू का दलिया चखा वह उसके लिये बिल्कुल ठीक था। सो वह उसको इतना अच्छा लगा कि वह उसके कटोरे का सारा दलिया खा गयी।

फिर वह दूसरे कमरे में गयी। वहॉ तीन कुर्सियॉ रखीं थीं। पहले वह बड़े भालू की कुर्सी पर बैठी वह उसके लिये बहुत सख्त थी। फिर वह बीच वाले भालू की कुर्सी पर बैठी वह उसके लिये बहुत मुलायम थी।

फिर वह छोटे भालू की कुर्सी पर बैठी वह उसके लिये बिल्कुल ठीक थी। वह कुर्सी गोल्डीलौक्स को इतनी पसन्द आयी कि वह उस पर बैठ कर तब तक झूलती रही जब तक कि वह टूट नहीं गयी।

फिर वह उस कमरे में गयी जहॉ तीनों भालू सोते थे। पहले वह बड़े भालू के पलंग पर लेटी पर वह उसके लिये उसके सिरहाने की तरफ से बहुत ऊॅचा था। फिर वह बीच वाले भालू के पलंग पर लेटी पर वह उसके लिये उसके पैरों की तरफ से बहुत ऊॅचा था।

फिर वह छोटे भालू के पलंग पर लेटी तो वह न तो सिरहाने की तरफ से ऊॅचा था और न ही पैरों की तरफ से ऊॅचा था। वह उसके लिये बिल्कुल ठीक था।

गोल्डीलौक्स को वह पलंग इतना अच्छा लगा कि वह चादर ओढ़ कर उस पलंग पर लेट गयी और लेटते ही गहरी नींद सो गयी।

कुछ देर बाद तीनों भालुओं ने सोचा कि अब उनका दलिया ठंडा हो गया होगा सो वे तीनों भालू नाश्ते के लिये घर वापस आये।

गोल्डीलौक्स ने बड़े भालू की चम्मच उसके कटोरे में ही छोड़ दी थी। जैसे ही भालू घर में घुसे बड़े भालू ने यह देख लिया और ज़ोर से बोला — "किसी ने मेरा दलिया खाया है।"

गोल्डीलौक्स ने बीच वाले भालू की चम्मच भी उसके कटोरे में छोड़ दी थी सो बीच वाला भालू बीच की आवाज में बोला — "किसी ने मेरा दलिया भी खाया है।"

फिर छोटे भालू ने अपना कटोरा देखा तो उसने देखा कि उसके दलिया का कटोरा तो खाली पड़ा है। वह अपनी पतली सी आवाज में बोला — "किसी ने मेरा दलिया भी खाया है और खत्म भी कर दिया।"

अब वे तीनों भालू दूसरे कमरे में गये। गोल्डीलौक्स ने बड़े भालू की गद्दी उसकी कुरसी में मुड़ी हुई छोड़ दी थी। बड़े भालू ने जब यह देखा तो ज़ोर से बोला — "कोई मेरी कुरसी बैठा है।"

गोल्डीलौक्स ने बीच वाले भालू की गद्दी उसकी कुरसी में नीचे धँसा दी थी। सो जब बीच वाले भालू ने अपनी कुरसी देखी तो अपनी बीच की आवाज में बोला — "मेरी कुरसी पर भी कोई बैठा है।"

फिर छोटे भालू ने अपनी कुरसी देखी तो अपनी पतली सी आवाज में बोला — "कोई मेरी कुरसी पर भी बैठा है और उसने तो उसे तोड़ भी दिया है।"

अब वे तीनों भालू अपने सोने वाले कमरे में आये। गोल्डीलौक्स ने बड़े भालू का तकिया अपनी जगह से हटा दिया था। सो उसने जब यह देखा तो ज़ोर से बोला — "कोई मेरे पलंग पर लेटा है।"

गोल्डीलौक्स ने बीच वाले भालू का तकिया और कम्बल दोनों ही उनकी जगह से हटा दिये थे। सो उसने जब यह देखा तो अपनी बीच की आवाज में बोला — "कोई मेरे पलंग पर भी लेटा है।"

फिर छोटे भालू ने अपना पलंग देखा तो अपनी पतली सी आवाज़ में बोला — "कोई मेरे पलंग पर लेटा है और वह यह है।"

यह सब सुन कर गोल्डीलौक्स की ऑख खुल गयी और वह इतना डर गयी कि पलंग से कूद कर खुली खिड़की से निकल कर बाहर कूद गयी और पीछे देखे बिना ही तेज़ी से भाग गयी और भागती ही चली गयी।

किसी को नहीं मालूम कि गोल्डीलौक्स भागती हुई कहॉ गयी क्योंकि तीनों भालुओं में से किसी ने उसे फिर नहीं देखा।

अगर तुमको वह कहीं मिल जाये तो उन भालुओं को जरूर बताना वे अभी तक उसको ढूँढ रहे हैं।

4 छोटी लाल मुर्गी[9]

एक छोटी लाल मुर्गी एक पहाड़ी की तलहटी में अकेली अपनी झोंपड़ी में रहती थी। हर सुबह वह अपना घर झाड़ बुहार कर, दरवाजा बन्द कर और उसकी चाभी अपने ऐप्रन की जेब में डाल कर बाजार जाया करती थी।

उसी पहाड़ी की चोटी पर एक चालाक लोमड़ा अपनी मॉ के साथ जंगल में रहता था। रोज सुबह उसकी मॉ एक बड़े से बरतन में पानी भरती थी और उसको उबलने के लिये रख देती थी।

उस समय वह लोमड़ा अपने होठ चाटता हुआ बोलता था — "मॉ, तुम क्या बना रही हो? आज मुझे गोश्त चाहिये। मुझे दस के बराबर भूख लगी है।"

और उसकी मॉ जवाब देती — "उॅह, दस के बराबर भूख? तो जाओ और उस लाल मुर्गी को पकड़ कर लाओ।"

रोज रोज वह लोमड़ा यह सुनते सुनते तंग आ गया था सो एक दिन उसने सोचा कि आज वह लाल मुर्गी को पकड़ कर ही लायेगा। सो वह लोमड़ा उस लाल मुर्गी की झोंपड़ी की तरफ चल दिया।

उसने उसकी झोंपड़ी के दरवाजे का हैन्डिल इधर घुमाया उधर घुमाया, पर वह दरवाजा नहीं खुला तो वह निराश हो कर घर लौट

[9] Little Red Hen – a folktale from Britain, Western Europe

आया और घर पर अकेले ही बैठ कर उस मुर्गी को पकड़ने के बारे में कुछ सोचने लगा।

उसने सोचा — "अगर मैं दस लोमड़ों के बराबर खाना खाना चाहता हूँ तो मुझे उस लाल मुर्गी को पकड़ कर लाना ही होगा। कल मैं तड़के ही उठ कर उस मुर्गी के घर के बाहर उसके निकलने का इन्तजार करूँगा।"

सो अगले दिन वह सुबह तड़के ही उठा। उस समय सभी सोये हुए थे। उसने अपने साथ एक बड़ी थैली और एक छोटी रस्सी ली और सूरज निकलने से पहले ही वह लाल मुर्गी की झोंपड़ी के पास पहुँच गया और छिप कर उसके बाहर निकलने का इन्तजार करने लगा।

भीतर से मुर्गी के अपने घर को झाड़ने बुहारने की आवाज आ रही थी। घर झाड़ बुहार कर जल्दी ही वह बाहर आ गयी और दरवाजा खुला छोड़ कर वह पास वाले पेड़ के नीचे से लकड़ियाँ चुनने चली गयी।

लोमड़े के लिये यह अच्छा मौका था सो वह मुर्गी के घर में घुस गया और एक आराम कुरसी पर छिप कर बैठ गया।

इतने में ही मुर्गी लकड़ियाँ चुन कर घर वापस आ गयी। वे लकड़ियाँ उसने अंगीठी के पास रख दीं और फिर उनमें आग लगाती हुई बोली — "लकड़ियों, मैं आग लगाती हूँ तुम जलो।"

इतने में ही लोमड़े को खॉसी आ गयी और वह बोला — "बहुत सुन्दर।"

मुर्गी बोली — "टुक टुक, कौन है यहॉ? टुक टुक।"

और वह डर के मारे कॉप गयी। उसके सामने तो लोमड़ा खड़ा था। अब क्या था, वह इस कोने से उस कोने में भागने लगी।

लोमड़े ने भारी सी आवाज में कहा — "जब तुम चावल के साथ पकोगी तब तुममें स्वाद आयेगा।"

छोटी लाल मुर्गी चिल्लायी — "भागो, भागो यहॉ से।"

डरी हुई लाल मुर्गी उड़ कर लकड़ी के एक लट्ठे पर बैठ गयी। वह इतनी डरी हुई थी कि लोमड़े पर से अपनी ऑख नहीं हटा पा रही थी।

दॉत किटकिटाते हुए और अपनी लाल जीभ बाहर निकालते हुए लोमड़े ने उसकी तरफ घूरा और फिर धीरे से अपनी पूँछ पर बैठ कर उसने जो चक्कर काटना शुरू किया तो वह घूमता ही रहा, घूमता ही रहा, घूमता ही रहा पर उसकी ऑखें मुर्गी पर ही लगी रहीं।

अब तो मुर्गी इतनी ज़्यादा डर गयी कि वह लोमड़े के सामने ही जा गिरी और लोमड़े ने तुरन्त ही उसे पकड़ लिया और बोला — "अहा, पकड़ लिया। मैंने तुम्हें पकड़ लिया। अब मैं तुम्हें थैली में बन्द करूँगा और फिर उसे रस्सी से बॉधूंगा।

मुझे दस के बराबर भूख लगी है, ओ लाल मुर्गी। मेरी मॉ तुझे पकायेगी और पका कर तुम्हें गरम गरम मेरे सामने परोसेगी। चावल तो अच्छे होते ही हैं परन्तु तुम्हारा स्वाद तो निराला है।"

सो लोमड़े ने उसे एक थैली में बन्द किया और थैली का मुँह रस्सी से बॉध कर अपने घर चल दिया।

वह कहता जा रहा था — "मेरे इस बड़े थैले के अन्दर लाल मुर्गी है। मैं उसे अपने घर ले जा रहा हूँ। जब मैं घर पहुँचूँगा तो बोलूँगा कि मैं शाम का खाना ले आया हूँ।"

इस विचार से लोमड़े को और भी ज़्यादा भूख लग आयी कि शाम को उसे यह मुर्गी खाने को मिलेगी और वह और ज़्यादा तेज़ तेज़ चल दिया।

परन्तु पहाड़ी की चढ़ाई बहुत ऊँची थी और धूप भी बहुत तेज़ थी सो वह बहुत जल्दी ही हॉफने लगा। आखिर वह बीच रास्ते में बैठ गया और पानी पीने के बारे में सोचने लगा।

उसने थैली कन्धे से उतारी और एक गड्ढे में छिपा दी और पानी की खोज में जंगल में चल दिया।

थैली के अन्दर से मुर्गी सब सुन रही थी। वह बड़ी खुश हुई। जब लोमड़ा चला गया और उसके कदमों के आने की आवाज आनी बन्द हो गयी तो अपने ऐप्रन की जेब में कैंची ढूँढी।

कैंची उसकी जेब ही थी। कैंची के साथ साथ उसने सुई धागा भी उसने निकाल लिया।

बड़ी होशियारी से उसने उस कैंची से थैली में एक छेद किया और फिर कैंची से उस छेद को बड़ा किया और इधर उधर झॉका पर लोमड़े का कहीं पता नहीं था। सो वह उस छेद में से बाहर निकल आयी।

बाहर निकल कर उसने एक बड़ा पत्थर उठा कर उस थैली में डाल दिया और छेद को सुई धागे से सिल दिया। छेद सिलने के बाद वह तुरन्त ही उलटे पैरों अपने घर की तरफ भाग ली और अन्दर घुस कर दरवाजा बन्द करके ताला लगा लिया।

लोमड़ा भी जल्दी ही वापस लौट आया। उसे ठंडा पानी मिल गया था सो वह बहुत खुश था। उसने गड्ढे में से थैली निकाली, कन्धे पर डाली और आगे बढ़ चला।

वह अभी भी गा रहा था — "मेरे इस बड़े थैले के अन्दर छोटी लाल मुर्गी है मैं उसे अपने घर ले जा रहा हूँ।"

बीच बीच में वह यह भी कहता जा रहा था "लगता है इस मुर्गी की हड्डियॉ बहुत तेज़ धार के समान हैं बहुत चुभ रही हैं ये मुझे।"

घर पहुँच कर लोमड़ा मॉ से बोला — "मॉ, मेरी कमर बहुत दुख रही है। यह इतनी भारी होगी यह मुझे पता ही नहीं था। मैं तो थक गया। यह लो। क्या तुमने पानी उबाल रखा है? मुझे दस के बराबर भूख लगी है।"

मॉ ने पूछा — "क्या तुम दस के बराबर भूखे हो? क्या तुमको छोटी लाल मुर्गी मिल गयी?

लोमड़े ने जवाब दिया — "हॉ मॉ, मैं उसे ले आया हूँ। आज मैं उसके घर में घुस गया था और उसे पकड़ लाया। देखो यह है वह।"

कह कर लोमड़े ने उस थैली का मुँह पानी के बरतन के ऊपर खोल दिया।

फड़ाक, अरे यह क्या? पानी में तो बजाय मुर्गी के पत्थर गिर गया। साथ ही वह उबलता पानी उसके और उसकी मॉ के ऊपर गिर गया।

लोमड़ा डर के मारे चीखता चिल्लाता दरवाजे की तरफ भाग लिया और पीछे पीछे उसकी मॉ भी "रुको रुको" की आवाज लगाती दौड़ी। सो आगे आगे बेटा और पीछे पीछे मॉ। और अभी भी वे एक दूसरे के पीछे दौड़ रहे हैं।

5 आलसी जैक[10]

ब्रिटेन की यह कहानी एक बहुत ही मजेदार और हॅसी की कहानी है। इस कहानी में देखो कि एक बेवकूफ लड़का किस तरह एक अमीर आदमी की बेटी को हॅसा कर उससे शादी करके खुद अमीर बन जाता है।

एक गॉव में एक स्त्री अपने एकलौते बेटे जैक के साथ रहती थी। जैक बहुत ही आलसी था। न तो वह घर में ही मॉ की कोई सहायता करता था और न वह बाहर ही कोई काम करता था। उसकी इस आदत से उसकी मॉ बहुत दुखी थी।

एक दिन गुस्से मे आ कर उसने जैक से कहा — "अगर कल से तुमने कोई काम शुरू नहीं किया तो मैं तुम्हें घर से बाहर निकाल दूॅगी।"

अब जैक तो यह सुन कर घबरा गया सो अगले दिन ही वह कुछ काम ढूॅढने चल दिया।

काम ढूॅढते ढूॅढते वह एक किसान के पास पहुॅचा और उसके पास उसने एक पैंस के लिये पूरे दिन काम करने का निश्चय किया।

---

[10] Lazy Jack – a folktale from England, Europe.
[It is listed by Mike Lockette on his page http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=41 as a Natie American folktale from Appalachian Region, USA]

शाम को बड़ी खुशी के साथ जैक ने वह पैंस का सिक्का किसान से लिया और घर चला।

आज वह बहुत खुश था। आज उसने पहली बार पैसा अपनी मेहनत से कमाया था। पहले उसने पैसा कभी रखा नहीं था सो उस को पैसा रखना आता भी नहीं था इसलिये वह उस पैनी को उछालता हुआ चला आ रहा था।

चलते चलते वह एक पुल पर से गुजरा जो एक नदी के ऊपर बना हुआ था। पैनी उछल कर नदी में जा गिरी और नदी में खो गयी। वह दुखी दुखी अपने घर आया।

जब उसने अपनी मॉ को यह बताया तो वह बोली — "तुमको वह पेनी जेब में रख कर लानी चाहिये थी।"

जैक कुछ दुखी आवाज में बोला — "अच्छा, अब की बार मैं ऐसा ही करूँगा।"

अगले दिन वह एक ग्वाले के पास काम करने के लिये गया। शाम को ग्वाले ने जैक को उसके काम के बदले में एक जग भर कर दूध दिया। उसने अपनी मॉ की सलाह के अनुसार उसको अपनी जैकेट की बड़ी जेब में भर लिया।

जाहिर है कि घर पहुँचने से पहले पहले ही वह दूध बिखर चुका था। घर पहुँचने पर जब उसकी मॉ ने पूछा कि "आज तुमको क्या मिला?"

तो उसने उसको बताया कि आज उसको दूध मिला। मॉ ने पूछा कि "दूध कहॉ है?"

तो उसने उसको बताया कि वह उसके कहे अनुसार अपनी जेब में रख कर लाया था पर अब वह पता नहीं कहॉ है।

उसकी मॉ ने कहा — "बहुत ही बेवकूफ हो तुम, तुमको वह दूध सॅभाल कर सिर पर रख कर लाना चाहिये था।"

जैक बोला "अच्छा, अगली बार से मैं ऐसा ही करूॅगा।

अगले दिन वह फिर किसी खेत पर काम करने गया। वहॉ सारा दिन काम करने के बाद मजदूरी के रूप में उसे क्रीम चीज़ मिली। तो अपनी मॉ के कहे अनुसार उसे अपने सिर पर रख लिया।

लेकिन यह क्या? उस दिन कड़ी धूप होने की वजह से घर आते आते वह सारी क्रीम चीज़ पिघल गयी और उसका चेहरा, बाल और कपड़े सभी खराब हो गये।

उसकी मॉ ने गुस्से में कहा — "जैक, तुम्हें अक्ल कब आयेगी। उसको तुम्हें हाथों में सॅभाल कर लाना था।"

जैक ने फिर वायदा किया कि अगले दिन से वह वैसा ही करेगा।

अगले दिन वह एक डबल रोटी बनाने वाले के पास गया। शाम को काम के बदले में उसे एक बिल्ली मिली। वह उसे सॅभाल

कर हाथों में ला रहा था कि रास्ते ही में उसने कुलमुलाना शुरू कर दिया और वह इतना ज़्यादा कुलमुलाई कि उसके हाथों से छूट कर भाग गयी।

खाली हाथ जब वह घर पहुँचा तो उसकी माँ फिर बहुत नाराज हुई और बोली — "तुम कैसे आदमी हो, वह बिल्ली थी तुमको उसे उसके गले में रस्सी बाँध कर लाना था।"

जैक फिर बोला — "माँ, कल से मैं ऐसा ही करूँगा।"

अगले दिन वह काम करने के लिये एक कसाई की दूकान पर गया। उस दिन शनिवार था इसलिये रविवार को खाने के लिये उसने उसको बकरे का एक बहुत ही बढ़िया कन्धा दिया।

जैक उसको देख कर बहुत ही खुश हुआ कि आज उसको बहुत बढ़िया खाना मिलेगा।

उसने अपनी माँ के कहे अनुसार बकरे के उस कन्धे में एक रस्सी बाँधी और उसे खींचता हुआ घर की तरफ चल दिया।

जाहिर है जब तक वह उसे ले कर घर पहुँचा वह टुकड़ा बिल्कुल ही बेकार हो चुका था।

अब की बार उसकी माँ ने उसे बहुत डाँटा और कहा — "बेवकूफ लड़के, तुम बहुत ही बेकार आदमी हो। रोज कमाते हो और रोज ही किसी न किसी तरीके से उसे बेकार कर देते हो।

अब केवल बन्द गोभी ही रखी है मेरे पास कल के लिये, वही खाना तुम कल। तुमको यह गोश्त अपने कन्धे पर रख कर लाना था।"

जैक बहुत ही शरमिन्दा हो कर बोला — "अच्छा मॉ, अगली बार मैं ऐसा ही करूॅगा।"

सोमवार को जैक फिर ग्वाले के पास काम के लिये गया। अब की बार उसे अपने काम के बदले में एक गधा मिला।

काफी परेशानी के बाद वह उस गधे को अपने कन्धे पर रखने में कामयाब हो सका। वह उसे ले कर धीरे धीरे सॅभाल कर चलने लगा।

उसके घर के रास्ते में एक बहुत ही अमीर आदमी का घर पड़ता था। उसके एक इकलौती बेटी थी। अमीर की बेटी बहुत सुन्दर थी पर वह गूॅगी थी।

अपने जीवन में वह कभी नहीं हॅसी थी। डाक्टरों का कहना था कि यदि दूसरा कोई उसे हॅसा सके तो शायद वह बोलने लायक हो सके।

उस अमीर के घर में उसको हॅसाने के लिये रोज ही कोई न कोई नाच, हॅसी के नाटक, मजाकिया कहानियॅा, मजाकिया गाने आदि होते रहते थे परन्तु उस लड़की के चेहरे पर अभी तक एक हल्की सी मुस्कुराहट भी नहीं आयी थी।

आखिर उस अमीर ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई उसकी बेटी को हॅसा देगा वह उसी से अपनी बेटी की शादी कर देगा और उसी को अपनी सारी धन दौलत भी दे देगा।

और दिनों की तरह से उस शाम को भी वह लड़की खिड़की में उदास बैठी बाहर की ओर देख रही थी कि उसको एक अजीब चीज़ देखने को मिली।

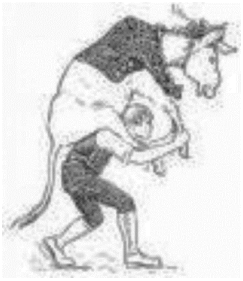

एक जवान लड़का एक ज़िन्दा गधे को अपने कन्धों पर रख कर ले जा रहा था। यह देखते ही वह लड़की ज़ोर से हॅस पड़ी और तब तक हॅसती रही जब तक कि उसकी ऑखों से ऑसू नहीं निकल पड़े।

जब अमीर ने अपनी बेटी की हॅसी की आवाज सुनी तो वह तुरन्त भागा भागा आया और जैक को अन्दर बुलाया।

वायदे के मुताबिक उसने अपनी बेटी की शादी जैक से कर दी और अपनी सारी धन सम्पत्ति उसको दे दी। जैक अपनी ससुराल चला गया और अब उसे काम करने की कोई जरूरत नहीं थी।

वहॉ जा कर उसने अपनी मॉ को भी बुला लिया और सब आराम से रहने लगे।

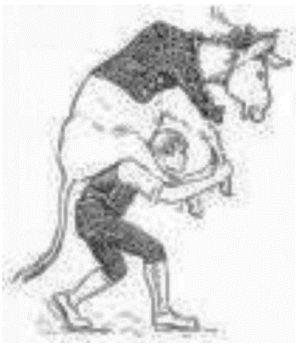

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–**4**
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–**5**
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–**6**
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**7**
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**8**
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
13 इटली की लोक कथाऐं–**9**
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
14 इटली की लोक कथाऐं–**10**
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
15 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
16 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**